

श्रीमद्भागवत स्कन्ध 8 अध्याय 11: बली की समता

14 September 2026



वज्र उठाए इन्द्र असुरराज को ललकारते हैं। पर बली बिना भय या क्रोध के उत्तर देते हैं, क्योंकि वे प्रत्येक विजय और प्रत्येक पराजय को काल की ही एक गति मानते हैं, और बुद्धिमान इनमें से किसी से विचलित नहीं होते। इस अध्याय की सबसे गहरी बुद्धि विजेता नहीं, अपितु पराजित बोलता है।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवत विज्ञम में आपका पुनः स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिमयी यात्रा। भगवान की उपस्थिति से असुरों की माया दूर होने पर देवता अपना साहस पुनः पाते हैं और महान युद्ध शीघ्र ही अपने समापन की ओर बढ़ता है — किन्तु इस एकादश अध्याय का असली हृदय देवताओं की विजय नहीं, अपितु पराजित असुरराज बली की अद्भुत समता है, जो वज्र के समक्ष भी न तनिक भय दिखाते हैं न शोक।

अध्याय की जानकारी

- ग्रन्थ: श्रीमद्भागवत महापुराण

- स्कन्ध: 8 (आठवाँ स्कन्ध)
- अध्याय: 11 (एकादश अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: युद्ध का समापन और बली की समता
- मुख्य वक्ता: श्रीशुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित से कहते हुए — इन्द्र, बली तथा नारद के वचन सहित
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: सागर-तट की युद्धभूमि; पश्चिमी पर्वत जहाँ असुर पुनर्जीवित होते हैं
- केन्द्रीय विषय: देवताओं और असुरों के युद्ध का समापन; बली का पतन और उनकी समता; असुर सेनापतियों तथा नमुचि का वध; नारद का हस्तक्षेप; गिरे असुरों का पुनर्जीवन
- प्रमुख श्लोक श्रेणी: स्कन्ध 8, अध्याय 11, श्लोक 1-48
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

पिछले अध्याय का सन्दर्भ

दशम अध्याय में असुरों ने देवताओं पर युद्ध किया और महाबली बली की माया से देवसेना को लगभग अभिभूत कर दिया — जब तक देवताओं ने भगवान को स्मरण न किया, जो गरुड़ पर प्रकट होकर माया को जागरण पर स्वप्न-सी दूर कर गए। यह अध्याय उसी मोड़ से युद्ध को उठाता है, जब साहस पाकर देवता असुरों पर कठोर दबाव डालते हैं।

देवता पलटवार करते हैं और इन्द्र बली का सामना करते हैं

भगवान विष्णु की कृपा से अपना धैर्य पुनः पाकर, इन्द्र और वायुदेव के नेतृत्व में देवताओं ने उन प्रत्येक असुर पर कठोर प्रहार किया जिन्होंने पहले उन पर आक्रमण किया था। जब इन्द्र ने क्रोध से भरकर बली पर अपना वज्र उठाया, तब बली के अनुयायी हाहाकार कर उठे। इन्द्र ने बली को यह कहकर ललकारा कि वह मात्र एक बाजीगर है जो छल से सच्चे शक्ति-स्वामियों को पराजित करना चाहता है। पर बली ने ऐसी समता से उत्तर दिया जिसकी बराबरी उसका शत्रु न कर सका।

श्रीबलिरुवाच

सङ्ग्रामे वर्तमानानां कालचोदितकर्मणाम् ।

कीर्तिर्जयोऽजयो मृत्युः सर्वेषां स्युरनुक्रमात् ॥ ७ ॥

श्रीबलिरुवाच सङ्ग्रामे वर्तमानानां कालचोदितकर्मणाम् कीर्तिर्जयोऽजयो मृत्युः सर्वेषां स्युरनुक्रमात्

अर्थ: बली ने कहा — युद्ध में लगे हुए सबके लिए, जिनके कर्म काल से प्रेरित हैं, यश, विजय, पराजय और मृत्यु अपने-अपने क्रम में आते हैं। (स्कन्ध 8, अध्याय 11, श्लोक 7)

इसलिए, बली ने आगे कहा, बुद्धिमान इस सबको काल के अधीन देखकर न हर्षित होते हैं न शोक करते हैं — यह सत्य इन्द्र नहीं जानते। वे इन्द्र के मर्मभेदी वचन हृदय में नहीं लेंगे, उन्होंने कहा, क्योंकि जो स्वयं को विजय और यश का कारण मानता है वह सज्जनों की दया का पात्र है।

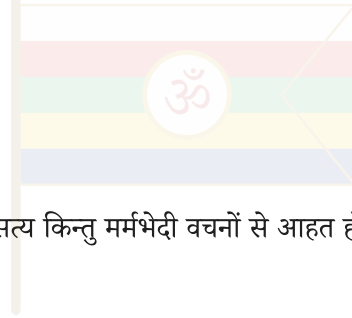


भगवान विष्णु की कृपा से साहस पुनः पाकर इन्द्र के नेतृत्व में देवता उन असुरों पर पलटवार करते हैं जिन्होंने उन पर आक्रमण किया था, और इन्द्र असुरराज बली पर अपना वज्र उठाते हैं (श्लोक 1-6)।

भगवान विष्णु की कृपा से साहस पुनः पाकर, इन्द्र के नेतृत्व में देवता उन असुरों पर पलटवार करते हैं जिन्होंने उन पर आक्रमण किया था, और इन्द्र असुरराज बली पर अपना वज्र उठाते हैं (श्लोक 1-6)।

बली गिरते हैं, और असुर सेनापतियों का वध

ऐसा कहकर वीर बली ने इन्द्र पर कान तक खींचे बाणों से पुनः प्रहार किया। सत्य किन्तु मर्मभेदी वचनों से आहत होकर इन्द्र और सह न सके और अपना अमोघ वज्र फेंक दिया।



प्राहरत् कुलिशं तस्मा अमोघं परमर्दनः ।

सयानो न्यपतद् भूमौ छिन्नपक्ष इवाचलः ॥ १२ ॥

प्राहरत् कुलिशं तस्मा अमोघं परमर्दनः सयानो न्यपतद् भूमौ छिन्नपक्ष इवाचलः

अर्थ: शत्रुमर्दक इन्द्र ने उस पर अपना अमोघ वज्र फेंका, और बली रथ सहित पृथ्वी पर गिर पड़े, जैसे कटे पंखों वाला पर्वत। (स्कन्ध 8, अध्याय 11, श्लोक 12)

अपने मित्र को गिरा देखकर असुर जम्भ इन्द्र पर टूट पड़ा और गदा से उन्हें तथा उनके गज पर प्रहार किया, पर इन्द्र ने वज्र से जम्भ का सिर काट दिया। तब जम्भ के बन्धु नमुचि, बल और पाक आए और इन्द्र को बाणों के जाल से ढक दिया, यहाँ तक कि दृष्टि से ओझल हो गए और नेतृविहीन देवता उन व्यापारियों की भाँति विलाप करने लगे जिनका जहाज डूब गया हो। पर इन्द्र मुक्त होकर रात्रि के अन्त के सूर्य-से चमकते हुए निकले और उनके बन्धुओं के देखते-देखते बल और पाक के सिर काट दिए।



इन्द्र के अमोघ वज्र से आहत होकर असुरराज बली अपने रथ सहित पृथ्वी पर गिर पड़ते हैं, मानो किसी पर्वत के पंख कट गए हों, और असुर सेनापति युद्ध के लिए टूट पड़ते हैं (श्लोक 10-18)।

इन्द्र के अमोघ वज्र से आहत होकर असुरराज बली रथ सहित पृथ्वी पर गिर पड़ते हैं, जैसे कटे पंखों वाला पर्वत, और असुर सेनापति युद्ध में टूट पड़ते हैं (श्लोक 10-18)।

वरदान-रक्षित नमुचि और सागर का फेन

अपने बन्धुओं की मृत्यु से शोक और क्रोध से भरकर नमुचि ने इन्द्र पर एक विशाल इस्पात-शूल फेंका, पर इन्द्र ने उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया और वज्र से नमुचि की ग्रीवा पर प्रहार किया — वही वज्र जिसने महाबली वृत्र का वध किया था। इन्द्र के आश्चर्य से, वह नमुचि की त्वचा तक न भेद सका। भयभीत होकर, और यह सोचते हुए कि किस भाग्य ने जगत को भ्रमित किया, इन्द्र निराश हो गए। तब आकाश से एक अशरीरी वाणी उनसे बोली।

इति शक्रं विषीदन्तमाह वागशरीरिणी ।

नायं शुष्कैरथो नार्द्रैर्वधमर्हति दानवः ॥ ३७ ॥

इति शक्रं विषीदन्तमाह वागशरीरिणी नायं शुष्कैरथो नार्द्रैर्वधमर्हति दानवः

अर्थ: इस प्रकार निराश हुए इन्द्र से एक अशरीरी वाणी ने कहा — यह असुर न किसी सूखी वस्तु से, न किसी गीली वस्तु से वध किया जा सकता है। (स्कन्ध 8, अध्याय 11, श्लोक 37)

वाणी ने बताया कि नमुचि को यह वरदान मिला था कि कोई सूखी या गीली वस्तु उसकी मृत्यु न ला सके; अतः इन्द्र को कोई अन्य उपाय खोजना होगा। मन को स्थिर करके इन्द्र ने सागर का फेन खोजा, जो न सूखा है न गीला, और उससे नमुचि का सिर काट दिया। ऋषियों ने उनकी स्तुति की और पुष्प बरसाए, गन्धर्वों ने गान किया, और दिव्य दुन्दुभियाँ बजीं। अन्य देवताओं ने भी, वायु, अग्नि और वरुण के नेतृत्व में, अपने शेष शत्रुओं का संहार किया।



जब इन्द्र का वज्र वरदान-रक्षित नमुचि को नहीं भेद पाता, तब एक अदृश्य वाणी बताती है कि वह किसी सूखी या गीली वस्तु से नहीं मारा जा सकता, और इन्द्र उसे समुद्र-फेन से मार देते हैं (श्लोक 29-40)।

जब इन्द्र का वज्र वरदान-रक्षित नमुचि को भेद नहीं पाता, तब एक अशरीरी वाणी बताती है कि वह किसी सूखी या गीली वस्तु से वध नहीं किया जा सकता, और इन्द्र सागर के फेन से उसका वध करते हैं (श्लोक 29-40)।

नारद युद्ध रोकते हैं, और बली पुनर्जीवित होते हैं

असुरों का संहार होते देख ब्रह्मा ने नारद को देवताओं के पास भेजा, जिन्होंने उन्हें अपना प्रयोजन सिद्ध होने पर शस्त्र त्यागने का परामर्श दिया।

श्रीनारद उवाच

भवद्विरमृतं प्राप्तं नारायणभुजाश्रयैः ।

श्रिया समेधिताः सर्व उपारमत विग्रहात् ॥ ४४ ॥

श्रीनारद उवाच भवद्विरमृतं प्राप्तं नारायणभुजाश्रयैः श्रिया समेधिताः सर्व उपारमत विग्रहात्

अर्थ: नारद ने कहा — तुमने भगवान नारायण की भुजाओं की शरण लेकर अमृत प्राप्त किया है, और तुम सब श्री देवी से अनुगृहीत हुए हो; अब युद्ध से विरत हो जाओ। (स्कन्ध 8, अध्याय 11, श्लोक 44)

नारद का परामर्श मानकर देवताओं ने अपना क्रोध और युद्ध का उत्साह त्याग दिया और स्वर्ग लौट गए। शेष असुर, नारद की सहमति से, बली के निष्प्राण शरीर को पश्चिमी पर्वत तक ले गए, जहाँ उनके गुरु शुक्राचार्य ने अपनी गुप्त विद्या से उन सबको पुनर्जीवित किया जिनके अंग और ग्रीवा अभी अखण्ड थे। बली भी सन्त के स्पर्श से पुनर्जीवित हुए — और, पराजित होकर भी, उन्हें तनिक शोक न हुआ, क्योंकि वे जगत के सत्य से भली-भाँति परिचित थे।

बलिश्चोशनसा स्पृष्टः प्रत्यापन्नेन्द्रियस्मृतिः ।

पराजितोऽपि नाखिद्यल्लोकतत्त्वविचक्षणः ॥ ४८ ॥

बलिश्चोशनसा स्पृष्टः प्रत्यापन्नेन्द्रियस्मृतिः पराजितोऽपि नाखिद्यल्लोकतत्त्वविचक्षणः

अर्थ: शुक्राचार्य के स्पर्श से बली की इन्द्रियाँ और स्मृति लौट आई; और पराजित होकर भी उन्होंने शोक न किया, क्योंकि वे जगत के सत्य में निपुण थे। (स्कन्ध ८, अध्याय ११, श्लोक ४८)



ब्रह्मा द्वारा भेजे गए ऋषि नारद विजयी देवताओं को परामर्श देते हैं कि अब जब अमृत प्राप्त हो गया है तो युद्ध रोक दें, और वे अस्त्र त्यागकर स्वर्ग लौट जाते हैं (श्लोक ४३-४६)।

ब्रह्मा द्वारा भेजे गए नारद विजयी देवताओं को अमृत जीत लिए जाने पर युद्ध से विरत होने का परामर्श देते हैं, और वे शस्त्र त्यागकर स्वर्ग लौट जाते हैं (श्लोक ४३-४६)।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. बुद्धिमान न विजय में हर्षित होते हैं न पराजय में शोक करते हैं। बली यश, विजय, पराजय और मृत्यु को काल के क्रमिक फेर देखते हैं, और इसलिए अविचल रहते हैं। परिणामों के प्रति समता ही सच्ची बुद्धि का चिह्न है (श्लोक ७-८)।
2. पराजय शोक नहीं लानी चाहिए। अपने पतन के पश्चात पुनर्जीवित होकर बली को तनिक भी शोक न हुआ, क्योंकि जगत के प्रति उनकी समझ किसी एक युद्ध के परिणाम से कहीं गहरी थी। जो इस गहरे यथार्थ को देखता है वह हानि से टूटता नहीं (श्लोक ४८)।
3. स्वयं को सफलता का कारण मानना दया का पात्र होना है। बली कोमलता से कहते हैं कि जो स्वयं को अपने यश का कर्ता मानता है वह सज्जनों की दया का पात्र है। अपनी विजयों में अहंकार काल और भगवान के हाथ को भूल जाता है (श्लोक ९)।

4. कोई वरदान भगवान की व्यवस्था से आगे नहीं टिकता। नमुचि का वरदान उसे सूखे-गीले से अभेद्य बनाता था, फिर भी भगवान के अपने मार्गदर्शन ने वह सागर-फेन प्रकट किया जो न सूखा था न गीला। दिव्य बुद्धि सदा मार्ग खोज लेती है (श्लोक 37-40)।

5. कृपा से जीती विजय संयम माँगती है, प्रतिशोध नहीं। नारायण की भुजाओं से अमृत सुरक्षित होते ही नारद ने देवताओं को रुकने को कहा। प्राप्त कृपा का अन्त शान्ति में हो, गिरे हुए के पीछे पड़ने में नहीं (श्लोक 44)।

6. बली की शान्ति भक्ति है, विरक्त दर्शन नहीं। उनकी अविचलता किसी चिन्तक की वह शान्ति नहीं जिसने केवल तर्क से निराशा को पीछे छोड़ दिया हो; यह उस भक्त की स्थिरता है जो जानता है कि सम्पूर्ण संघर्ष — उसका उत्थान, उसका पतन, इन्द्र के वज्र का आघात — केवल उस भगवान की व्यवस्था से घटित होता है जिसकी वह सेवा करता है। भक्त का कर्तव्य है कर्म करना और प्रत्येक परिणाम, चाहे विजय हो या विनाश, भगवान के चरणों में छोड़ देना; यही एकमात्र कारण है कि अभी-अभी अपना राज्य और अपना प्राण खोने वाला राजा स्मृति लौटते ही केवल शान्ति अनुभव कर सकता है। जो यहाँ वैराग्य-सा दिखता है वह वास्तव में शरणागति है — वही शरणागति जो एक दिन इसी बली को बिना क्षण भर की हिचक के अपना सब कुछ एक छोटे ब्राह्मण बालक के हाथों में सौंपने ले जाएगी (श्लोक 7-9, 48)।

एक भक्तिमय चिन्तन

यह इस अध्याय के शान्त आश्रयों में से एक है कि इसकी सबसे गहरी शिक्षा विजयी देवताओं से नहीं, अपितु पराजित असुरराज से आती है। बली अपने प्राण पर लक्षित वज्र के साथ खड़े हैं, और डींग हाँकने या काँपने के बजाय वे सन्त-से बोलते हैं: यश और पराजय, विजय और मृत्यु — सब अपने क्रम में आते हैं, काल से प्रेरित; बुद्धिमान न हर्षित होते हैं न शोक करते हैं। और जब वे गिरकर पुनर्जीवित किए जाते हैं, श्रीशुकदेव स्पष्ट कहते हैं कि उन्हें शोक न हुआ, क्योंकि वे जगत के सत्य को समझते थे। यहाँ ऐसी समता है जिसकी कल्पना भी हममें से अधिकांश को कठिन लगती है — सब कुछ खोकर भी न टूटना। बली की शान्ति उदासीनता से नहीं आती; वह इस स्पष्ट दर्शन से आती है कि परिणाम अन्ततः उनके हाथ में नहीं, कि विजय और हानि का यह खेल उनसे बड़ी इच्छा से खुलता है। उस दृष्टि में गहरी स्वतन्त्रता है। हमारा अधिकांश दुःख हानि स्वयं नहीं, अपितु उसके प्रति हमारा प्रतिरोध है, हमारी यह ज़िद कि होना कुछ और चाहिए था। बली हमें काल के फेर के भीतर शान्त हृदय दिखाते हैं — यश और पराजय दोनों को उनके आने पर स्वीकारते, और किसी पर शोक न करते।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज जब कुछ आपके अनुकूल न हो — कोई विफल योजना, कोई बाधा, कोई छोटी पराजय — तब प्रतिक्रिया से पूर्व रुकें, और धीरे से बली के वचन स्मरण करें: कि विजय और पराजय अपने क्रम में आते हैं, काल से प्रेरित, और बुद्धिमान किसी पर शोक नहीं करते। उस परिणाम को “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय” के शब्दों से भगवान को अर्पित करें, यह ज़िद छोड़ते हुए कि वह अन्यथा होना चाहिए था। इसे समता का एक छोटा अभ्यास बनने दें: किसी हानि से टूटे बिना उसका सामना करना, इस सत्य में विश्राम करते हुए कि उसका फेर अन्ततः आपके हाथ में नहीं।

उपसंहार

युद्ध यहाँ समाप्त होता है, पर अध्याय का असली उपहार यह विजय नहीं — यह बली का उदाहरण है। गिराए गए, अपमानित, और अपने गुरु की कृपा से ही पुनर्जीवित हुए, फिर भी असुरराज को तनिक भी शोक नहीं होता, क्योंकि उन्होंने हर युद्ध का परिणाम, जीत हो या हार, उस भगवान की इच्छा को सौंप दिया है जो उसे विधान करते हैं। यही वह समता है जिसे यह अध्याय हमें अपने साथ ले जाने को कहता है —

उदासीनता नहीं, अपितु विश्वास — वही विश्वास जो एक दिन इसी बली को याचना करने आए एक छोटे ब्राह्मण बालक को बिना हिचक अपना सब कुछ अर्पित करने देगा।

श्रीमद्भागवत का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जाग्रत करे।

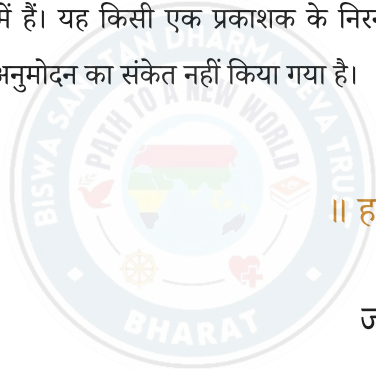
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ एवं आभार

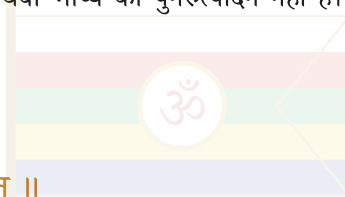
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), आठवाँ स्कन्ध, एकादश अध्याय, पृष्ठ 780–784।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज़्डम • विश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुरूप प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, निष्ठापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश-रूप में हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद अथवा भाष्य का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक से किसी सम्बद्धता अथवा उसके अनुमोदन का संकेत नहीं किया गया है।



॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव



ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-8-chapter-11-the-conclusion-of-the-war-and-balis-equanimity-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज़्डम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट